



नौसेना की सुरक्षा अभी तक एक स्वप्न

संदर्भ

भारतीय नौसेना की सुरक्षा को लेकर शुक्रवार को संसद में पेश नयंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की एक ऑडिट में कहा गया है कि नौसेना दुर्घटनाओं की जाँच की कई सफ़ारिशें लागू अभी तक नहीं हुई हैं। नौसेना की सुरक्षा आज भी एक दूर का स्वप्न है।

परमुख बदि

- सीएजी की ऑडिट में कहा गया है कि पिनडुबबियों और जहाज़ों से जुड़ी कई दुर्घटनाओं एवं सेवा अधिकारियों और नाविकों की मौत के बावजूद भी केंद्र सरकार द्वारा नौसेना की दुर्घटनाओं के नपिटारे के लिये एक समर्पित संगठन के गठन को औपचारिक मंजूरी देना बाकी है।
- भारतीय नौसेना के पास इसकी स्थापना से अब तक सुरक्षा मुद्दों से नपिटने के लिये कोई संस्थागत रूपरेखा नहीं है। सुरक्षा मुद्दों से नपिटने के लिये 2014 में भारतीय नौसेना द्वारा एक समर्पित संगठन की स्थापना की गई थी, परन्तु यह अभी भी सरकार से मंजूरी का इंतज़ार कर रही है।

वर्ष 2007-08 से 2015-16 के बीच हुए हादसे

- भारतीय नौसेना सुरक्षा संगठन बनाने का वचिर 2006 में तय किया गया था और अंततः अक्टूबर 2012 में उसे प्रख्यापित किया गया था। इसे फरवरी 2014 में स्थापित किया गया था, हालाँकि अभी तक इसे सरकार द्वारा स्वीकृत प्रदान नहीं की गई है।
- भारतीय नौसेना में वर्ष 2007-08 से 2015-16 तक हुए कुल 38 हादसों में 33 सेवा अधिकारियों और नाविकों की मृत्यु हुई है।
- इन हादसों या दुर्घटनाओं में नौसेना ने दो जहाज़ों (आईएनएस वधियगरि और टीआरवी ए-72) और एक पनडुबबी (आईएनएस सधिरक्षक) को खोया है।
- भारतीय नौसेना में सबसे अधिक 14 हादसे वर्ष 2013-14 में हुए थे।
- इसके आलावा 2007-08 में छः, 2014-15 में पाँच और 2008-09 एवं 2009-10 में चार-चार हादसे हुए थे।
- ऑडिट में बताया गया है कि अब तक कुल 38 दुर्घटनाओं में से 15 (39%) आग या वस्फोट या बाढ़ के कारण, 6 (16%) हादसे जहाज़ों के सतह पर सपर्श के कारण, अन्य 6 (16%) हादसे जहाज़ों की टक्कर के कारण और शेष 11 (29%) हादसे विविध कारणों से हुए थे।